अध्याय - आठ

अर्जुन सिंह 'अशान्त'

सारन के भोजपुरी क्षेत्र में हहरत गंगा का तट के प्राकृतिक परिवेश में बसल आमी गाँव में कविवर अर्जुन सिंह 'अशान्त' के जन्म 1927 ई० में भइल रहे। आमी गाँव में अम्बिका भवानी के प्रसिद्ध मंदिर शक्ति पीठ मानल जाला। उहां का पुलिस सेवा में कार्यरत रहीं बाकिर कविता लिखल उनका जिनगी के एगो अंग रहे। कवि सम्मेलन में त उनकर सरस मधुर कविता के लोग खूब सराहते रहे, भोजपुरी गायक लोगन भी उनका गीतन से लोग के खूब मनोरंजन करत रहस। अशान्तजी मूलतः प्रकृति के कवि रहलें बाकिर जस-जस भोजपुरी साहित्य में कविता के स्वर बदलल उहाँ का भी आपन कलम ओने मोड़ दिहलीं। भोजपुरी में उनकर गजल के एगो स्थान बा। उनकर गीतन के संग्रह 'अमरलती' आ गौतम बुद्ध के जीवन पर लिखल महाकाव्य 'बुद्धायन' प्रकाशित हो चुकल बा। इहां का अब इ दुनिया में नइखीं।

विषय प्रवेश

ऋतु गीत में विभिन्न ऋतुअन में प्रकृति के बदलत रंग के मनोरम चित्रण भइल बा। 'कुहुकि-कुहुकि', 'तलफत भुभुरिया', 'झिर-झिर झिहरत' जइसन ठेठ भोजपुरी के सरस शब्दन के प्रयोग एह कविता के सौंदर्य में चार चाँद लगावता।

ऋतु गीत

कुहुकि-कुहुकि कुहकावे कोइलिया,
कुहकि-कुहकि कुहुकावे ॥
पतझड़ आइल, उजड़ल बगिया,
मधु ऋतु में टुसिआइल फुलुंगिया ।
ए हरियर-हरियर पलइन में,
सुतल सनेहिया जगावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

खिसिकल मधु-ऋतु, उठल बजरिया,
चुवल कोंच, झर गइल मोंजरिया ।
पछिया झरकि चले, तलफे भुभुरिया,
देहिया में अगिया लगावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

झुलसि गइल दिन, अउँसी के रतिया
बसे फुहार रिमझिम बरसतिया ।
करिया बदरवा के सजल करेजवा में,
चमकि बिजुरिया डेरावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

उपटि गइल भरि छिछली पोखरिया,
बिछली भइल किंच-किंचर डगरिया ।
सुनी बँसवरिया में धोबिनी चिरइया,
घुघआ पहरूआ जगावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

आइल शद ऋतु उगल अँजोरिया,
दुधवा में लउके नहाइल नगरिया ।
सिहरी गइल सखि छतिया निरखि चाँद,
पुरवा झटकि सिहरावे कोइलिया ।। कुहुकि ... ।।

ठिठुरि शरद ऋतु ओढ़ले दोलइया,
केंकुरी कुहरियाँ में कटेला समइया ।
मागल उमिरिया, जड़इया के जगरम
अइसन सरदिया मुआवे कोइलिया ।। कुहुकि ... ।।

सरसो-केरइया-सनइया फुलाइल,
झिर-झिर-झिहिर शिशिर-ऋतु आइल ।
सलिया गजरि गइल, तबहूँ ना हलिया,
पुरुब मुलुकवा से आवे कोइलिया ।। कुहुकि ... ।।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अशान्त जी कवना जिला के निवासी रहीं ?
2. अशान्त जी कवना नौकरी में रहीं ?
3. एह कविता में कवना ऋतु के वर्णन बाटे ?

(क) बसंत (ख) शरद (ग) हेमंत (घ) हर ऋतु के

4. पढ़ल कविता के आधार पर बताईं कि का झर रहल बा ?

(क) पत्ता (ख) फूल (ग) मोंजर (घ) फल

5. के कुहुक रहल बा, ई पढ़ल कविता के आधार बताईं ?

(क) मोर (ख) पपीहरा (ग) आदमी (घ) कोइल

6. कविता में कवना-कवना चिरई के नाँव आइल बा ?

(क) कोइल (ख) धोबिनी (ग) धुधआ (घ) एह तीनों के

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बसंत ऋतु के बरनन एह कविता के आधार पर करीं।
2. वर्षा ऋतु में का हाल होला, ई पढ़ल कविता का आधार पर बतलाई।
3. मधु ऋतु के खिसकला पर कवन चीज के बाजार उठ जाला ?
4. शिशिर ऋतु में कवन-कवन फसल फुलाला।
5. गाछ-बिरीछ के पतई कवना ऋतु में झर जाले ?
6. शरद ऋतु के अँजोरिया के बरनन करीं।
7. ऊ परिवेश कइसन बा जब देहिया में अगिया लगावे कोइलिया ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कविता के आधार बारहो मास के ऋतु चक्र में परिवर्तन कइसे होता, बतलाईं।
2. 'कोइल' के मार्फत प्रकृति के बरनन कइसे भइल बा, बतलाईं।

परियोजना कार्य

लोक प्रचलित एगो बारहमासा के खोज के लिखीं आ गाईं।

शब्द भंडार

मधु ऋतु - बसंत
टुसिआइल - पेड़-पौधन के डाढ़ि में नया टुसी यानी कलंगी लगाल
फुलुंगिया - फुलुंगी, डेहुंगी या डाढ़ के ऊपरी हिस्सा
कोंच - महुआ के गुच्छा
पछिया - पच्छिम से चले वाली हवा, पछेया
झरकि - गरमी से भरल लहरा
तलफे - खूब गरम हो गइल
भुभुरिया - भुंभुर, राख जवन तनी गरम होखे
अउँसी - उमस से भरल
बिछली - फिसलन, बिछलहर
घुघआ - घुघुआ-एगो चिरई
पलइन - पल्लव, कलँगी
पुरवा - पुरवइया
दोलइया - दोलाई-रजाई खानी अइसन ओढ़नी जवना में रूई ना रहे, खाली कपड़ा के दुगो पल्ला मगजी से जोड़ के सीयल रहेला
केंकुरी - केंकुर के, घुड़की मार के यानी हाथ पाँव सिकोड़ के
केरइया - केराब (एगो पौधा)

भाषा सक्रियता

1. नीचे दिहल शब्द कवना तरे के हउवन स ?

पतझड़, उजड़ल, अउँसी, छिछली, कुहुकाबल, नहाइल

2. नीचे दिहल शब्दन में कवना मूल शब्दो में इया प्रत्यय जुड़ल ना

(जइसे-कोइल + इया = कोइलिया में कोइल मूल शब्द बा)

दहिया, पछिया, अगिया, करिया, बिजुरिया, डगरिया, चिरइया, बँसवरिया, उमिरिया, सलिया, समइया

3. नीचे दिहल क्रियापद से संज्ञा बनाईं, (जइसे उजड़ल से उजाड़)

टुसिआइल
बतियाइल
लतिआवल

104

ओढ़ल

जागल

आइल –

4. नीचे दिहल क्रिया पद के मूल शब्द का होई ?

कोंचिलाइल

बिछलाइल

नहाइल

पनिआइल

5. पश्चिम से चले वाली बयार के पछेया कहल जाला, अइसहीं उत्तर, पुरुब आ दक्खिन से बहे वाली बयार के का कहल जाला ?

परियोजना कार्य

1. ऋतुराज बसंत के आगमन के समय अपना के गाँव सीवान के परिवर्तन पर एगो निबंध लिखीं।
2. लोक प्रचलित बसंत आ होली के गीत लिखीं आ अपना साथियन संगे गावे के अभ्यास करीं।

पाठ से बहरी के चीज

नीचे लिखल अपठित कविता पढ़ला के बाद नीचे दिहल गइल सवालन के उत्तर दीं -

घरे-घरे पहुँचल सनेसा बयार के।
आइल दिन कि हँसत बसंती बयार के।।
लहराइलि चम्पई चुनरिया बधार में,
हाट लगल सोना के नदिया-किछार में,
अझुराइलि फसलन के सुगापाँख अँचरा में।
साध-भरल अँखिया सुरतिया निहार के।
आइल दिन बिहँसत बसन्ती बयार के।।
कुहुकि उठलि कोइलिया अमवाँ के डार से,
लचकलि उमिरिया दरदिया के भार से,
मधुबन का दुअरा प भीर लगल परियन के
रस में गोताइलि जवानी सिंगार के।
आइल दिन बिहँसत बसंती बयार के।।

सवाल

1. कविता पढ़ के बसंत ऋतु के वर्णन करीं।
2. बसंत कवना महीना में चढ़ेला ?
3. कविता के लेखक के नाँव बताई ?
4. बसंत के सनेसा के घरे-घरे के पहुँचावत बा ?
5. मधुबन के दुअरा प केकर भीड़ लागल बा ?

शब्द भंडार

सनेसा	-	संदेश
बिहँसल	-	मुस्कुरात
बयार	-	हवा
डार	-	डाली
लचकल	-	झुकल